25 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बेहद की वैराग्य वृति धारी मैं मास्टर विश्व शिक्षक हूँ

➢➢ मन बुद्धि सहित कर्मेन्द्रियों की मालिक, मैं आत्मा,...

➢➢ चैक कर रही हूँ अपने सभी सूक्ष्म लगावों को...

➳ _ ➳ स्थान के प्रति लगाव..

➳ _ ➳ देहधारियों के प्रति लगाव...

➳ _ ➳ अपनी विशेषताओं के प्रति लगाव...

→ सभी सूक्ष्म लगावों को...

→ "एक मेरा बाबा" में समेटकर मैं आत्मा,

→ मन बुद्धि से बैठ गयी हूँ हिस्ट्री हॉल में,

→ बापदादा के चित्र के सम्मुख,

→ स्वमानों पर गहराई से मनन करती हुई...

- मैं मास्टर शिक्षक हूँ,
- मैं बेहद की वैरागी आत्मा हूँ,
- मैं ईश्वरीय सेवाधारी हूँ...

➳ _ ➳ सामने बापदादा का चित्र, बाहें फैलाएं...

➳ _ ➳ "आ जाओ लाडलों अब, अव्यक्त है इशारें"....

→ ये ही अव्यक्त इशारें मुझ आत्मा को'...

→ देह से न्यारा बना कर...

→ बापदादा के स्नेह में घेरे में डुबोते जा रहें है....

- स्नेह सागर में डूबती मैं आत्मा...
- गहरे
- और भी गहरे...
- समाती जा रही हूँ...

→ सुनहरे प्रकाश के घेरे के बीच मैं आत्मा,

→ बापदादा के साथ विश्व ग्लोब पर...

→ ज्ञान, पवित्रता, सुख, शांति की किरणें....

→ झरनों के रूप में प्रवाहित करती हुई...

→ देख रही हूँ इस ऊँचाई से उन बन्धनों को,

→ जो मुझे हदों में बाँधते हैं...

- कितने तुच्छ हैं,
- लघु हैं,
- और सारहीन हैं,

- मेरे इस बेहद और विराट रूप के सामने...

➳ _ ➳ अपार आनंद का अनुभव करती मैं आत्मा... '

➳ _ ➳ मैं 'मेरा बाबा' और 'मेरा बेहद का परिवार'...

→ प्रकाश का झरना...

→ बापदादा की आँखों से बहता हुआ...

→ मुझे पूरी तरह भिगो रहा है...

→ इस प्रकाश से पूरी तरह ढक गया हैं सम्पूर्ण ग्लोब...

→ अपार ख़ुशी और संतुष्टता के अहसास से...

→ लबालब मैं आत्मा...

→ बापदादा के प्रेम में समाई हुई...

→ लौट आई हूँ वापस हिस्ट्री हॉल में,

→ और देख रही हूँ बापदादा का दूसरा चित्र...

- साक्षी अवस्था में बाप दादा,
- सम्पूर्ण न्यारापन,
- एक हाथ ऊपर
- और दूसरा नीचे की ओर...
- पहले रूप के एकदम अपोजिट....
  - देर तक निहारती हुई मैं आत्मा...
  - सम्पूर्ण साक्षी भाव...
  - और न्यारापन महसूस कर रही हूँ...
  - सभी सेवाओं, और कुछ देर पहले के...
  - अपने सभी सूक्ष्म लगावों के प्रति...